# बनारस जिले के माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

**सकीब अहमद अंसारी**
**पी-एच.डी. शोध छात्र,**
**डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय,**
**इंदौर (म.प्र.)**

**डॉ. (श्रीमती) दिव्या विजयवर्गीय**
**सहायक प्राध्यापिका एवं शोध निर्देशिका,**
**डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय,**
**इंदौर (म.प्र.)**

## शोध सार

शोध अध्ययन का उद्देश्य "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों की तुलना करना" था। शोध अध्ययन की परिकल्पना "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" थी। बनारस जिले के माध्यमिक स्तर के आठ विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा करने के पश्चात इन विद्यालयों में से कक्षा आठवीं के समस्त विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया था। न्यादर्श में कुल 660 विद्यार्थियों का चयन किया गया था। जिसमे ग्रामीण क्षेत्र के 332 एवं शहरी क्षेत्र 328 विद्यार्थी सम्मिलित थे। विद्यार्थियों के समायोजन के आकलन हेतु मानकीकृत समायोजन प्रश्नावली के हिंदी संस्करण का उपयोग किया गया था। प्रश्नावली का विकास श्रीवास्तव एवं श्रीवास्तव (1997) द्वारा किया गया था। प्रश्नावली का विश्वसनीयता गुणांक का प्रसार 0.68 से 0.84 तक है। प्रश्नावली की वैधता को निकष वैधता विधि द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। जिसका सह सम्बन्ध गुणांक का मान 0.88 था। प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र 'टी' परीक्षण के द्वारा किया गया था। शोध के निष्कर्ष थे। (1) ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन का माध्य फलांक 379.84 है, जो कि शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांक 372.21 से सार्थक रूप से उच्च है। (2) ग्रामीण विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर शहरी विद्यार्थियों के समायोजन स्तर से अधिक पाया जाता है।

सूचक शब्द : बनारस, माध्यमिक स्तर, समायोजन, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी, तुलनात्मक अध्ययन

## प्रस्तावना

समायोजन दो शब्दों से मिलकर बना है, सम एवं आयोजन सम् का अर्थ है भली-भांति अच्छी तरह या समान रूप से, और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात अच्छी तरह व्यवस्था करना। इस प्रकार समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्था या अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया से है, जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकता पूरी हो जाये और मानसिक द्वन्द न हो।

शेफर के अनुसार, "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसकी सहायता से कोई जीवित प्राणी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली स्थितियों तथा आवश्यकताओं के मध्य सन्तुलन स्थापित करता है।"

स्किनर के अनुसार "समायोजन अधिगम की एक प्रक्रिया है।"

स्मिथ के अनुसार "एक अच्छा समायोजन वह है, जो यथार्थ पर आधारित व सन्तोष देने वाला होता है।"

कालमैन के अनुसार "समायोजन व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाइयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है।"

उक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताओं तथा उन आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली परिस्थितियों में सामंजस्य तथा सन्तुलन स्थापित करने की प्रक्रिया हैं। जब इन दोनों में सन्तुलन स्थापित नहीं हो पाता है, तो व्यक्ति कुण्ठा तथा नैराश्य का शिकार होकर असामान्य व्यवहार

करने लगता है। व्यवहारों में असामान्यता की स्थिति ही कुसमायोजन की अवस्था है। यदि व्यवहारों को असामान्यता गम्भीर हो जाये तो उसे हम मानसिक रोगग्रस्तता कहते हैं।

## अध्ययन का औचित्य

पडेगांवकर तथा महेत (2011) ने अपने अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया। भारती (2017) ने अपने अध्ययन में यह ज्ञात किया कि, शहरी छात्रों का समायोजन ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक था। कुमार एवं रानी (2017) ने अपने शोध अध्ययन में ज्ञात किया कि शहरी छात्राओं में ग्रामीण छात्राओं की तुलना में समायोजन का अधिक स्तर अधिक होता है। विज्ञान विषय की छात्राओं का समायोजन कला विषय की छात्राओं की तुलना में अधिक पाया गया। झा (2019) ने यह निष्कर्ष दिया कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पारिवारिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य समायोजन में तो कोई अंतर नहीं होता, किन्तु शहरी विद्यार्थियों का विद्यालयीन समायोजन ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक होता है। इंदुबाला (2023) ने अपने अध्ययन में पाया गया कि बालिका माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का शैक्षिक समायोजन माध्यमिक विद्यालय के छात्रों से अधिक है। पूर्व में किये गए इन अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि, विभिन्न शोधार्थियों द्वारा शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, किन्तु बनारस जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर तुलनात्मक अध्ययन अभी तक किसी भी शोधार्थी द्वारा नहीं किया गया है। अत: शोधार्थी द्वारा इस क्षेत्र में शोध कार्य करने की आवश्यकता महसूस की गयी।

## उद्देश्य

शोध अध्ययन के उद्देश्य था।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों की तुलना करना।

## परिकल्पनाएँ

शोध अध्ययन की परिकल्पना थी।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**शोध प्रविधि :** शोध की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक थी।

## न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए समिष्ट बनारस जिले के माध्यमिक स्तर के समस्त अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालय थे। उक्त विद्यालयों में से चार-चार अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया था। उक्त आठ विद्यालयों में से कक्षा आठवीं के समस्त विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया था। न्यादर्श में कुल 660 विद्यार्थियों का चयन किया गया था। जिसमे ग्रामीण क्षेत्र के 332 एवं शहरी क्षेत्र 328 विद्यार्थी सम्मिलित थे।

## शोध उपकरण

शोध में चयनित समायोजन के आकलन हेतु मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया गया था।

### समायोजन प्रश्नावली

विद्यार्थियों के समायोजन के आकलन हेतु मानकीकृत समायोजन प्रश्नावली के हिंदी संस्करण का उपयोग किया गया था। प्रश्नावली का विकास श्रीवास्तव एवं श्रीवास्तव (1997) द्वारा किया गया था प्रश्नावली में समायोजन के छह क्षेत्रों सामाजिक, गृह, स्वास्थ्य, विद्यालयीन, संवेगात्मक एवं व्यक्तिगत को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक आयामों से सम्बंधित 20 पद प्रश्नावली में दिए गए है। इस प्रकार प्रश्नवाली में कुल पदों की संख्या 120 है। प्रत्येक पद हेतु दो विकल्प हाँ अथवा नहीं दिए गए थे। इन विकल्पों में से विद्यार्थियों को किसी एक विकल्प का चयन करना था। इस मापनी की विश्वसनीयता अर्ध विछेदन एवं कुडर रिचर्डसन विधि द्वारा स्थापित की गयी थी। विश्वसनीयता गुणांक का प्रसार 0.68 से 0.84 तक है। प्रश्नावली की वैधता निकष वैधता विधि द्वारा प्रतिस्थापित की गयी थी। जिसका सह सम्बन्ध गुणांक का मान 0.88 था।

## प्रदत विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र 'टी' परीक्षण के द्वारा किया गया था।

## परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों की तुलना करना" था। अत: इस उद्देश्य से सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण स्वतंत्र 'टी' परीक्षण के द्वारा किया गया इसके परिणाम तालिका 1 में प्रस्तुत किये गए है।

तालिका 1 : आवासीय पृष्ठभूमिवार समायोजन के न्यादर्श, माध्य, मानक विचलन एवं टी मान

| आवासीय पृष्ठभूमि | न्यादर्श | माध्य | मानक विचलन | टी मान |
|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण | 332 | 379.84 | 6.33 | 14.80 |
| शहरी | 328 | 372.21 | 7.02 | |

तालिका 1 से विदित है कि 'टी' का मान 14.80 है। जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जबकि df=658 है। इससे यह ज्ञात है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। अत: शून्य परिकल्पना कि "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" को निरस्त किया जाता है।

रेखा चित्र 1 : ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के समायोजन के माध्य फलांक

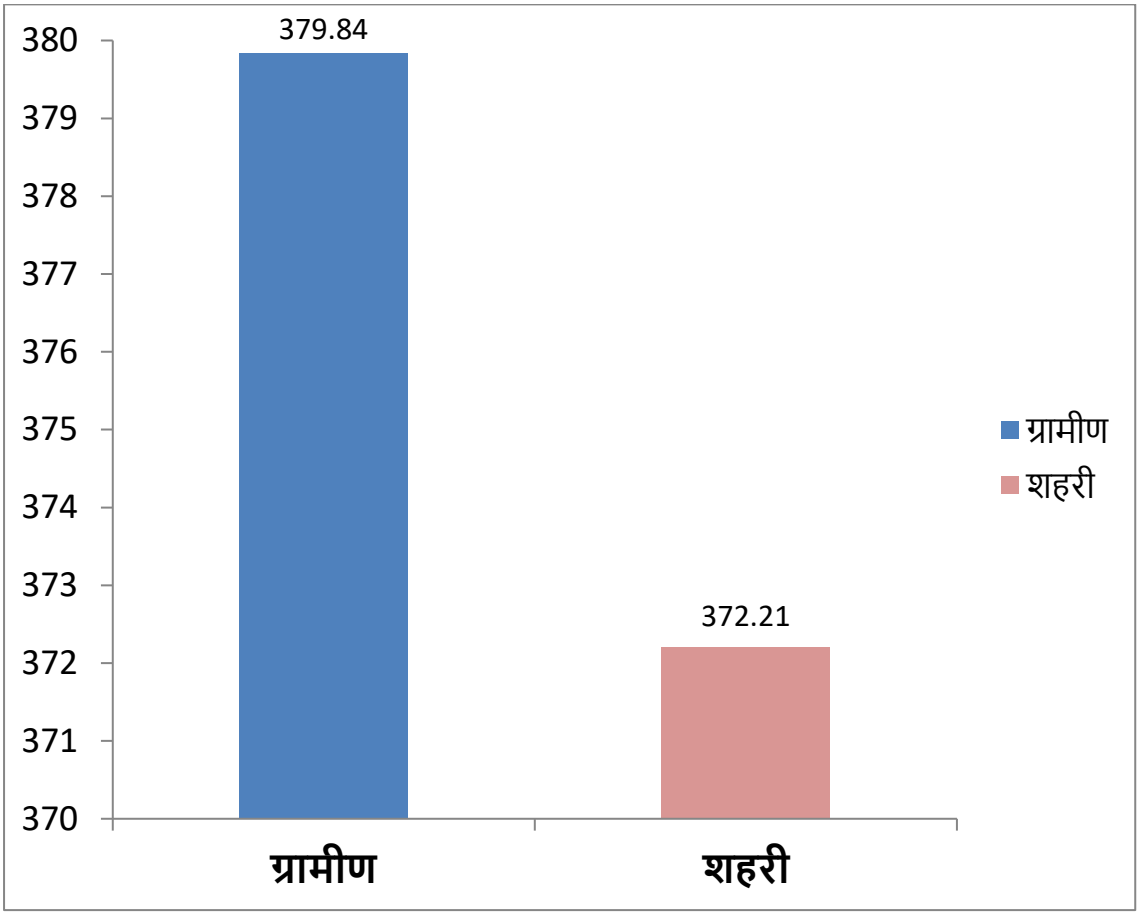


तालिका एवं रेखा चित्र 1 से यह भी विदित होता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन का माध्य फलांक 379.84 है, जो कि शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांक 372.21 से सार्थक रूप से उच्च है। अत: इससे यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर शहरी विद्यार्थियों के समायोजन स्तर से अधिक पाया जाता है।

## निष्कर्ष एवं चर्चा

ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन का माध्य फलांक 379.84 है, जो कि शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के माध्य फलांक 372.21 से सार्थक रूप से उच्च है। अत: इससे यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर शहरी विद्यार्थियों के समायोजन स्तर से अधिक पाया जाता है। किन्तु भारती (2017) तथा कुमार एवं रानी (2017) के अनुसार शहरी विद्यार्थियों में समायोजन स्टार अधिक पाया गया था। प्रस्तुत शोध में ग्रामीण विद्यार्थियों का समायोजन स्तर अधिक पाया गया। इसके पीछे यह भी कारण हो सकता है कि न्यूनतम संसाधनों में ही ग्रामीण विद्यार्थियों का दैनिक जीवन व्यतीत होता है एवं वो इन्हीं आधार पर स्वयं को समयोजित कर लेते है।

## परिसीमन

(1) अध्ययन में बनारस जिले के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया था।
(2) प्रस्तुत शोध में सिर्फ कक्षा के 8 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया था।
(3) अध्ययन में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया था।
(4) प्रस्तुत शोध में सिर्फ उ.प्र. बोर्ड के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया था।

## सन्दर्भ

दवे, आई. (1971). शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, (चतुर्थ संस्करण), राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.

कुमार, डी. एवं रानी, एन. (2017). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन आल सब्जेक्ट्स इन मल्टी लैंग्वेजेज एजुकेशन, मॉडर्न मैनेजमेंट, एप्लाइड साइंस एंड सोशल साइंस, 5(2), 102-103.

झा, डी.के. (2019). ग्रामीण और शहरी छात्रों के समायोजन स्तर एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन, श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका 6(6), 112-117.